कृषि नवाचार
ISSN: 3048-6092
https://www.krishinavachar.in
खण्ड 02 भाग 09 दिसम्बर, 2025

शादी में फूलों की मांग और फ्लोरिकल्चर से किसानों की बढ़ती आमदनी: एक विश्लेषण

जोनी [1*] और सरोज [2]
[1]एम.एस-सी., डी. डी. सी. डिग्री कॉलेज, धामपुर, बिजनौर
[2]प्रधानाचार्या, रामा पब्लिक जू. हा. स्कूल, नगीना, बिजनौर
***E-mail: jaunithakur1212@gmail.com**

प्रस्तावना

जैसा कि सभी जानते हैं, नवम्बर और दिसम्बर विवाहों का प्रमुख मौसम होते हैं। इस दौरान फूलों की मांग अत्यधिक बढ़ जाती है, क्योंकि फूल न केवल विवाहों और उनसे जुड़े समारोहों की शोभा बढ़ाते हैं, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक महत्व भी रखते हैं। फूलों का उपयोग सजावट, हवन, मांगलिक रस्मों और उपहार के रूप में किया जाता है, जिससे विवाहों से जुड़ी गतिविधियों में आकर्षण और भव्यता आती है।

साथ ही, फूल उगाने वाले किसानों की आर्थिक स्थिति में भी सुधार होता है। इस मौसम में फूलों की बढ़ी हुई मांग के कारण उनकी पैदावार का मूल्य अधिक मिलता है, जिससे उनकी आय में वृद्धि होती है और उन्हें कृषि के प्रति प्रोत्साहन भी मिलता है। इससे न केवल कृषि व्यवसाय को लाभ होता है, बल्कि यह स्थानीय आर्थिक गतिविधियों और रोजगार सृजन में भी योगदान देता है। इस लेख में मैं इसी विषय फूलों का महत्व, विवाहों में उनकी भूमिका और इससे जुड़े किसानों की आर्थिक समृद्धि पर चर्चा कर रही हूँ।

फूलों से शादी में सजावट: उपयोग के प्रमुख रूप

भारत में विवाह समारोहों में फूलों का महत्व अत्यंत विशेष होता है। प्रत्येक रस्म और सजावट में फूलों का उपयोग न केवल सौंदर्य बढ़ाने के लिए किया जाता है, बल्कि यह शुभता और मंगल का प्रतीक भी माना जाता है। शादी के अवसर पर फूलों की मांग अनेक रूपों में दिखाई देती है-

1. **वरमाला:** दूल्हा-दुल्हन के मिलन का प्रतीक। मुख्य रूप से गुलाब, ऑर्किड, रजनीगंधा और गेंदा के फूलों से तैयार की जाती हैं। आजकल थीम आधारित व रंग-संयोजन वाली मालाएँ लोकप्रिय हैं।

2. **मंडप सजावट:** विवाह की मुख्य रस्मों का केंद्र होने के कारण यहाँ फूलों का सबसे अधिक प्रयोग होता है। गेंदा, गुलाब, लिली, ऑर्किड, ट्यूलिप आदि फूलों का उपयोग कर पारंपरिक और आधुनिक सजावट की जाती है।प्राकृतिक सुगंध से वातावरण को पवित्र और आकर्षक बनाया जाता है।

3. **सिरपौश/सेहरा:** दूल्हे की पोशाक में राजसी आकर्षण जोड़ने के लिए फूलों से बने सेहरे का उपयोग होता है। आमतौर पर चमेली, रजनीगंधा, गुलाब की कलियाँ या कृत्रिम फूलों का संयोजन किया जाता है।
4. **स्टेज डेकोरेशन:** दूल्हा-दुल्हन के बैठने वाले मंच की थीम आधारित सजावट की जाती है। ताजे फूलों, लाइटिंग और

कृषि नवाचार

ISSN: 3048-6092
https://www.krishinavachar.in
खण्ड 02 भाग 09 दिसम्बर, 2025

कपड़ों के संयोजन से विशेष डिज़ाइन बनाए जाते हैं। फोटो शूट और मेहमानों के स्वागत के लिए यह आकर्षण का केंद्र होता है।

5. **गेट डेकोरेशन:** विवाह स्थल के प्रवेश द्वार पर फूलों की चाप, झूमर, और फूलों के परदे लगाए जाते हैं। यह मेहमानों के स्वागत और आयोजन की भव्यता को दर्शाता है।

6. **बारात की गाड़ियों और घोड़ी की सजावट:** बारात की कारों और घोड़ी पर फूलों की मालाओं, हारों और डिजाइन पैटर्न का उपयोग किया जाता है।यह पूरे आयोजन में उत्सव और सौंदर्य का माहौल बनाता है।

शादी के सीज़न में फूलों की बढ़ती माँग और फ्लोरिकल्चर बाज़ार का विस्तार

शादी का पीक सीजन (अक्टूबर–फरवरी और मई–जून) में फूलों की मांग कई गुना बढ़ जाती है। इस समय फूलों की कीमतें भी सामान्य से 2–3 गुना तक बढ़ जाती हैं। **उदाहरण:** गेंदे के फूल की कीमत रु. 30/kg से रु. 80–100/kg तक पहुंच सकती है।गुलाब की माला रु. 20 की बजाय रु. 50–60 में बिकती है।

तालिका 1: शादी सीजन में फूलों की कीमतों में वृद्धि

फूल का नाम	सामान्य मूल्य (रु./किग्रा.)	शादी सीजन मूल्य (रु./किग्रा.)
गेंदा	रु. 25–30	रु. 80–100
गुलाब	रु. 50–60	रु. 120–150
रजनीगंधा	रु. 80	रु. 200+
ऑर्किड / लिली	रु. 150–200	रु. 300–400

तालिका 2: फ्लोरिकल्चर बाज़ार का विस्तार

विवरण	आँकड़े / वर्ष
भारत में फ्लोरिकल्चर बाज़ार का अनुमानित आकार (2024)	रु. 292 अरब (रु. 29,200 करोड़)
अनुमानित बाज़ार आकार (2033 तक)	रु. 744 अरब
वार्षिक वृद्धि दर	लगभग 10.9% प्रति वर्ष
लूज फ्लावर (जैसे गेंदा, रजनीगंधा) की मांग में वृद्धि	लगातार दो अंकों की वृद्धि
कट फ्लावर (जैसे गुलाब, लिली) की मांग	शहरी क्षेत्रों में 20–25% वृद्धि
भारत से फूलों का निर्यात (2023–24)	19,677.89 मीट्रिक टन (रु. 717.83 करोड़)
भारत में कुल उत्पादन	2,284,000 MT (Loose) और 947,000 MT (Cut)
अनुमानित विवाह सीज़न (नवम्बर–मार्च) के दौरान मांग वृद्धि	30–40% तक अधिक बिक्री

शादी के सीज़न में फूलों की माँग में वृद्धि के कारण

1. **शादी-सजावट का बढ़ता प्रचलन:** विवाह समारोह अब भव्य आयोजनों में बदल चुके हैं, जहाँ फूलों की सजावट अनिवार्य बन गई है।
2. **सोशल मीडिया और थीम-वेडिंग का चलन:** फूलों की थीम आधारित सजावट से मांग बढ़ी है।
3. **मौसमी उतार-चढ़ाव:** विवाह सीज़न (नवंबर से मार्च) में फूलों की कीमतें औसतन 25–50% तक बढ़ जाती हैं, जिससे किसानों की आमदनी में वृद्धि होती है।
4. **शहरी बाजारों का विस्तार:** मेट्रो शहरों जैसे दिल्ली, मुंबई, बेंगलुरु, जयपुर आदि में सजावट उद्योग का वार्षिक कारोबार रु. 5,000 करोड़ से अधिक आँका गया है।
5. **निर्यात अवसरों में वृद्धि:** विवाह-सजावट के लिए भारत के फूल अब मध्य-पूर्व, यूरोप और दक्षिण-पूर्व एशिया तक भेजे जा रहे हैं।

फूलों के बाज़ार में शादी के सीजन का आर्थिक प्रभाव और किसानों की आय में वृद्धि

तालिका 3: फूलों के बाज़ार में शादी के सीजन का प्रभाव और किसानों की आय वृद्धि

ISSN: 3048-6092
https://www.krishinavachar.in
खण्ड 02 भाग 09 दिसम्बर, 2025

वर्ष	फ्लोरिकल्चर बाज़ार आकार (रु. करोड़)	सालाना वृद्धि दर (%)	शादी में औसत मांग(%)	कुल फूल उत्पादन (मीट्रिक टन)	किसानों वृद्धि (%)
2020	18,500	8.2	15	2,500,000	6.5
2021	21,000	9.1	18	2,720,000	7.8
2022	24,700	10.2	21	2,980,000	9.3
2023	29,200	10.9	25	3,231,000	11.4
2024	33,500	11.2	28	3,460,000	12.7
2025	37,800	12.0	30	3,710,000	14.0

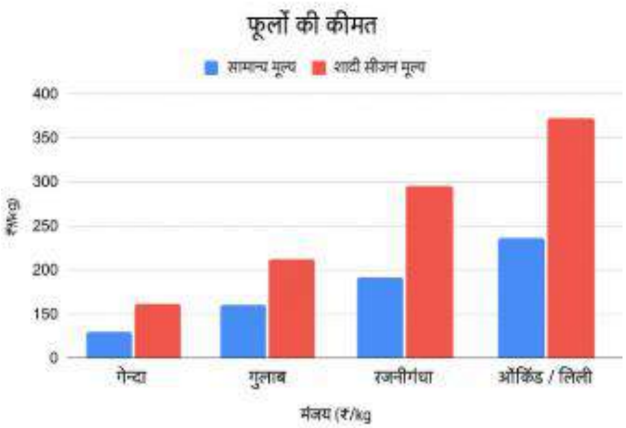

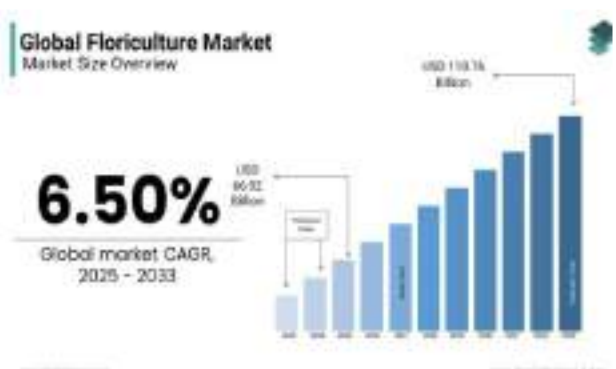

तालिका 4: उत्पादन में वृद्धि और किसान परिवर्तन

राज्य	पारंपरिक फसल आय (रु. /एकड़)	फूल खेती से औसत आय (रु. /एकड़)	आय वृद्धि (%)	प्रमुख फूल
उत्तर प्रदेश	45,000	2,10,000	366	गेंदा, गुलाब
महाराष्ट्र	50,000	4,50,000	800	जिरेनियम, ऑर्किड
राजस्थान	42,000	1,80,000	328	गेंदा, रजनीगंधा
कर्नाटक	48,000	5,20,000	983	ऑर्किड, लिली
हिमाचल प्रदेश	40,000	3,25,000	712	कारनेशन, ग्रीन हाउस गुलाब

आर्थिक सशक्तिकरण

फूलों की खेती ने ग्रामीण अर्थव्यवस्था को नई दिशा दी है। अब किसान पारंपरिक फसलों की बजाय फ्लोरिकल्चर को अपनाकर अधिक आय अर्जित कर रहे हैं।

- **रोज़गार सृजन:** फूलों की खेती में अधिक श्रम की आवश्यकता होती है, जिससे ग्रामीण युवाओं और महिलाओं को रोजगार मिलता है।
- **महिला सशक्तिकरण:** महिलाएँ पौधरोपण, तोड़ाई, पैकिंग और बिक्री में सक्रिय भूमिका निभा रही हैं, जिससे उनकी आर्थिक स्वतंत्रता बढ़ी है।
- **मूल्य संवर्धन:** गुलाब जल, अगरबत्ती, परफ्यूम और सूखे फूलों जैसे उत्पादों से किसानों को अतिरिक्त आय होती है।
- **निर्यात वृद्धि:** भारत हर वर्ष लगभग रु.880 करोड़ के फूल विदेशों में निर्यात करता है, जिससे विदेशी मुद्रा में योगदान मिलता है।
- **स्थानीय बाजार की मजबूती:** शादी, त्योहार और धार्मिक आयोजनों में बढ़ती मांग से किसानों की सीधी आमदनी बढ़ रही है।
- **तकनीकी और सरकारी सहयोग:** बागवानी बोर्ड और MIDH जैसी योजनाएँ किसानों को प्रशिक्षण, अनुदान और आधुनिक तकनीक प्रदान कर रही हैं।

मुख्य बाधाएँ, प्रभाव और समाधान

तालिका 5: मुख्य बाधाएँ, प्रभाव और समाधान

समस्या	प्रभाव	समाधान
मौसम संवेदनशीलता	उत्पादन 20–30% कम, फूल खराब होने की संभावना	पॉलीहाउस, शेड नेट, जलवायु-नियंत्रित ग्रीनहाउस
कीट एवं रोग	उत्पादन घटता है, गुणवत्ता प्रभावित	जैविक कीटनाशक, एकीकृत कीट प्रबंधन, फसल निरीक्षण
कटाई के बाद हानि	10–25% फूल खराब, आय में कमी	कोल्ड स्टोरेज, कोल्ड चेन, पैकिंग यूनिट्स

अधिक आपूर्ति से मूल्य गिरावट	कीमतें 30–40% गिर सकती हैं, आय अस्थिर	अनुबंध खेती, अग्रिम बुकिंग, सीजन पूर्वानुमान
बिचौलियों का दबाव	किसान को उचित मूल्य नहीं मिलता	eNAM, किसान उत्पादन संगठन, सीधे बिक्री प्लेटफॉर्म
उच्च प्रारंभिक निवेश	छोटे किसानों के लिए प्रवेश कठिन	सरकारी सब्सिडी, क्लस्टर फार्मिंग, NABARD ऋण
बाजार पहुँच की कमी	फूल जल्दी खराब, बिक्री सीमित	डिजिटल मार्केटप्लेस, स्थानीय संग्रह केंद्र, परिवहन सहायता
मूल्य अस्थिरता	मौसमी आय अस्थिर	न्यूनतम समर्थन मूल्य, फूल बीमा योजना
तकनीकी प्रशिक्षण की कमी	आधुनिक तकनीक का लाभ नहीं, उत्पादन कम	कृषि विश्वविद्यालय और प्रशिक्षण कार्यक्रम
भंडारण एवं पैकिंग की कमी	गुणवत्ता घटती है, निर्यात मुश्किल	कोल्ड रूम और पैकिंग सेंटर ग्रामीण क्षेत्रों में स्थापित करना
परिवहन लागत अधिक	ताजा फूल समय पर नहीं पहुँचते, मार्जिन घटता है	PPP मॉडल के माध्यम सेकोल्ड चेन नेटवर्क विस्तार
वित्तीय साक्षरता की कमी	योजनाओं और ऋण का लाभ नहीं	ग्रामीण बैंकिंग कैंप, डिजिटल वित्तीय शिक्षा, जागरूकता अभियान

निष्कर्ष

शादी और त्यौहारों के कारण फूलों की मांग 20–30% बढ़ती है, जिससे भारत में फ्लोरिकल्चर उद्योग का विस्तार हुआ है। 2023–24 में 2.28 मिलियन टन लूस फ्लावर और 0.95 मिलियन टन कट फ्लावर का उत्पादन हुआ, जिसमें शादी के सीजन का हिस्सा लगभग 40% था। कट-फ्लावर की कीमतें 20–35% और गेंदा/रजनीगंधा की थोक कीमतें 15–25% बढ़ जाती हैं। छोटे और मध्यम किसान शादी के सीजन में प्रतिदिन रु. 5,000 – रु. 7,000 कमा सकते हैं। इससे पैकेजिंग, कोल्ड स्टोरेज, परिवहन और थोक-बिक्री जैसे व्यवसाय भी विकसित हुए हैं। फ्लोरिकल्चर बाजार 2024 में रु. 29,200 करोड़ था और 2033 तक रु. 74,400 करोड़ तक पहुँचने की संभावना है (CAGR 10.9%)। इस उद्योग ने ग्रामीण रोजगार, महिला और युवा सहभागिता, और आर्थिक सुदृढ़ीकरण में योगदान दिया है। मौसम, कीट, पोस्ट-हार्वेस्ट हानि और निवेश लागत जैसी चुनौतियों को तकनीकी प्रशिक्षण, कोल्ड चैन, पालीहाउस, ई-मार्केटिंग और सरकारी सब्सिडी जैसी पहल कम कर सकती हैं।

●●●